भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन्ही विलम्बा।। 34।।

Bhayee prasanna Aadi Jagadambaa
Dayee shakti nahin keenheen vilambaa

इससे माँ जगदम्बा उनपर प्रसन्न हो गईं। उसी क्षण बिना कोई देर किए उनकी खोई हुई शक्तियाँ उन्हें प्रदान कीं।

Then, O Primeval Goddesses Jagadamba ji, you were propitiated and in no time you bestowed him with his lost powers.

मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो।। 35।।

Moko maatu kasht ati ghero
Tum bin kaun harai dukh mero

हे माता, अनेक कष्टों ने मुझे घेरा हुआ है। आपके सिवाय कौन है जो मेरे दुःखों को हर सकता है।

O Mother! I am surrounded with pain. Who else but you can provide relief and end my sorrows.